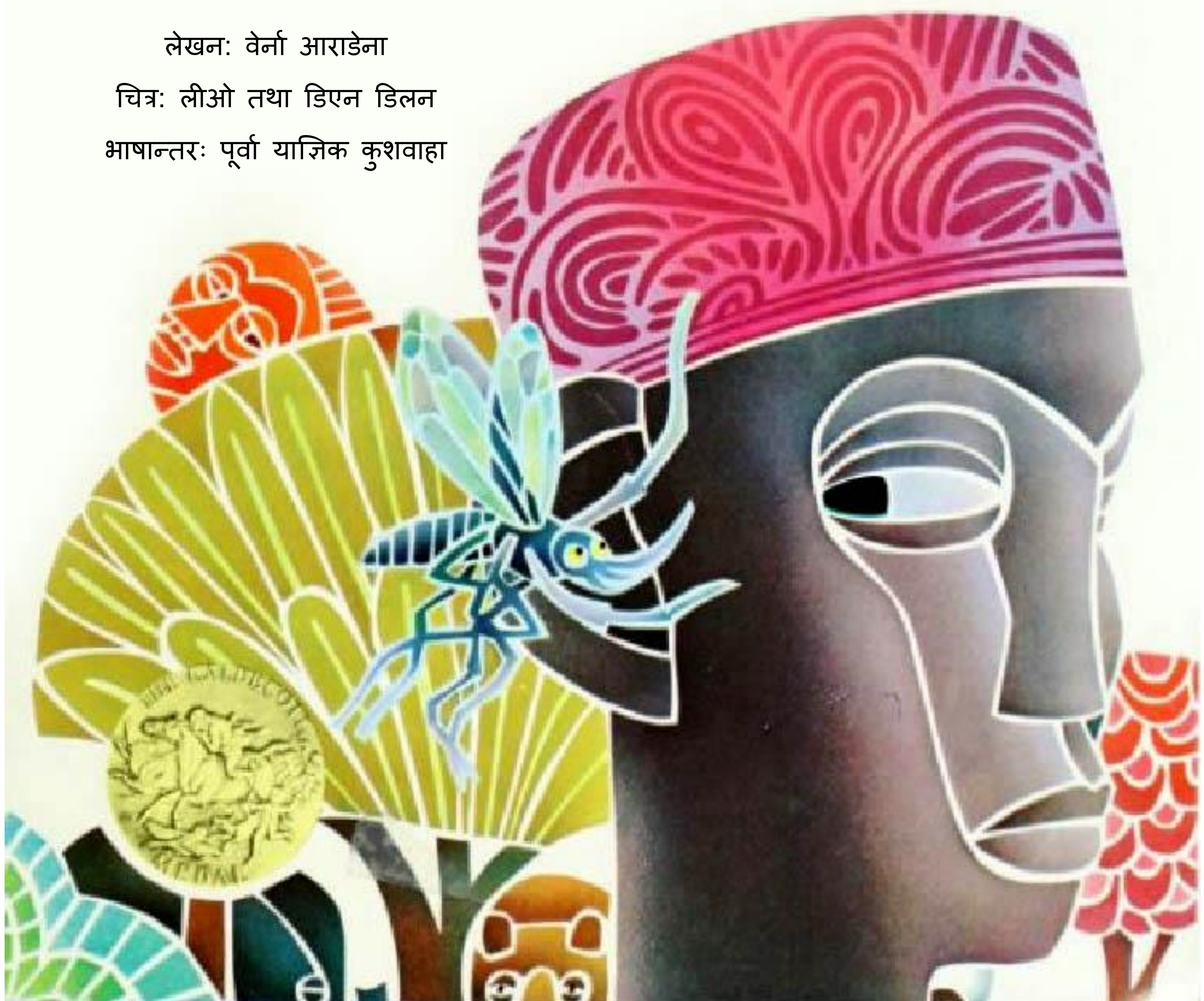
मच्छर लोगों के कानों में भिनभिनाते क्यों हैं

लेखन: वेर्ना आराडेना

चित्र: लीओ तथा डिएन डिलन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





मच्छर लोगों के कानों में भिनभिनाते क्यों हैं

लेखन: वेर्ना आराडेना

चित्र: लीओ तथा डिएन डिलन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक दिन एक मच्छर ने एक गोह (इगुआना) को पानी के कुंड से पानी पीते देखा। मच्छर ने कहा, "भाई गोह, मैंने कल जो देखा उस पर तुम्हें कभी विश्वास नहीं होगा।"

"तो बता कर देख लो," गोह ने पलट कर कहा।

मच्छर बोला, "मैंने एक किसान को ऐसे बड़े-बड़े रतालू खोदते देखा, जो मेरे जितने बड़े थे।"

"अरे! रतालू की तुलना में मच्छर भला क्या है?" गोह ने झिड़क कर कहा। "ऐसी बकवास सुनने से बेहतर है मैं बहरा ही हो जाऊं!" उसने दो छोटी टहनियाँ उठाईं और अपने कानों में ठूंस लीं। और खरपतवार के के बीच मच-मच, मच-मच, मच-मच करता चल दिया।





गोह मन ही मन कुढ़ता-बड़बड़ाता चला जा रहा था कि पास से अजगर गुज़रा। अजगर ने सिर उठाया और कहा, “सुप्रभात भाई गोह!”

गोह कोई जवाब न दे, अपना सिर हिलाते-डुलाते, हिलाते-डुलाते, हिलाते-डुलाते, आगे बढ़ता गया।

“अरे इसने तो मुझसे बात भला क्यों नहीं की?” अजगर ने खुद से ही पूछा। “वह ज़रूर किसी बात से नाराज़ होगा। लगता है वह मेरे ख़िलाफ़ कोई साज़िश रच रहा है। सो अजगर ने छिपने की जगह तलाशी। उसे जो पहली जगह दिखी वह खरगोशनी का बिल था। वह उसी में घुस गया, सरसर, सरसर, सरसर।

इधर खरगोशनी ने एक बड़े-भारी अजगर को अपने बिल में घुसते देखा तो वह सहम गई। उसने उल्टी तरफ़ की मिट्टी खोदी और बाहर निकल मैदान में कूदती भागी, कुदक, कुदक, कुदक।



पेड़ पर बैठे एक कौवे ने खरगोशनी को दिन-दहाड़े जान बचा भागते देखा। वह फ़ौरन पूरे जंगल में काँव-काँव करते उड़ा। सबको ख़तरे से आगाह करना आख़िर उसकी ज़िम्मेदारी जो थी।

बन्दर ने कौवे की काँव-काँव सुनी। उसे लगा कोई भारी मुसीबत आस-पास ही आन पड़ी है। वह खौं, खौं, खौं करने लगा और

एक से दूसरे पेड़ पर छलाँग लगाने लगा ताकि दूसरे जानवरों को चेतावनी देने में मदद कर सके। जब वह कूदता-फांदता बढ़ रहा था, उसका पैर एक मरी हुई डाली पर पड़ा। डाली टूटी ओर वह धपाक से नीचे उल्लू के घोंसले पर जा गिरा, जिससे उल्लू माँ के एक बच्चे की मौत हो गई।



माँ उल्लू उस वक़्त घर पर थी ही नहीं। हालांकि अममून वह रात को ही शिकार करती थी, इस समय उसके बच्चे भूखे थे, सो वह दिन में भी खाना तलाश रही थी। जब वह लौटी उसने अपने एक बच्चे को मरा पाया। बाकी बच्चों ने बताया कि बन्दर ने उसे मार डाला था। वह पूरे दिन और पूरी रात अपने पेड़ पर बैठी सोग मनाती रही, वह उदास थी, बहुत उदास, बहुत, बहुत उदास।

बात यह थी कि हर दिन उल्लू ही सूरज को जगाया करती थी ताकि भोर आ सके। पर अगले दिन जब उसे आवाज़ देनी थी, उसने दी ही नहीं।

रात लम्बी, और लम्बी खिंचती गई। जंगल के जानवर समझ गए कि रात इतनी देर तक तो रहती नहीं। उन्हें डर लगा कि सूरज अब कभी लौट कर आएगा ही नहीं।





अंत-तंत जंगल के राजा शेर ने जानवरों की सभा बुलाई। वे आए और अलाव के गिर्द धप, धप, धप, बैठ गए। पर उल्लू माँ नहीं आई। उसे बुलाने बारहसिंगे को भेजा गया।

जब वह आई तो शेर राजा ने पूछा, ‘‘उल्लू माँ, आज तुमने सूरज को आवाज़ दे जगाया क्यों नहीं? रात लम्बी, लम्बी, लम्बी चले ही जा रही है। सब फिक्र में हैं।’’

उल्लू माँ ने कहा, ‘‘बन्दर ने मेरे बच्चे को मार डाला है। मैं सूरज को जगा ही नहीं सकती।’’

राजा शेर ने इकट्ठा हुए जानवरों से कहाः

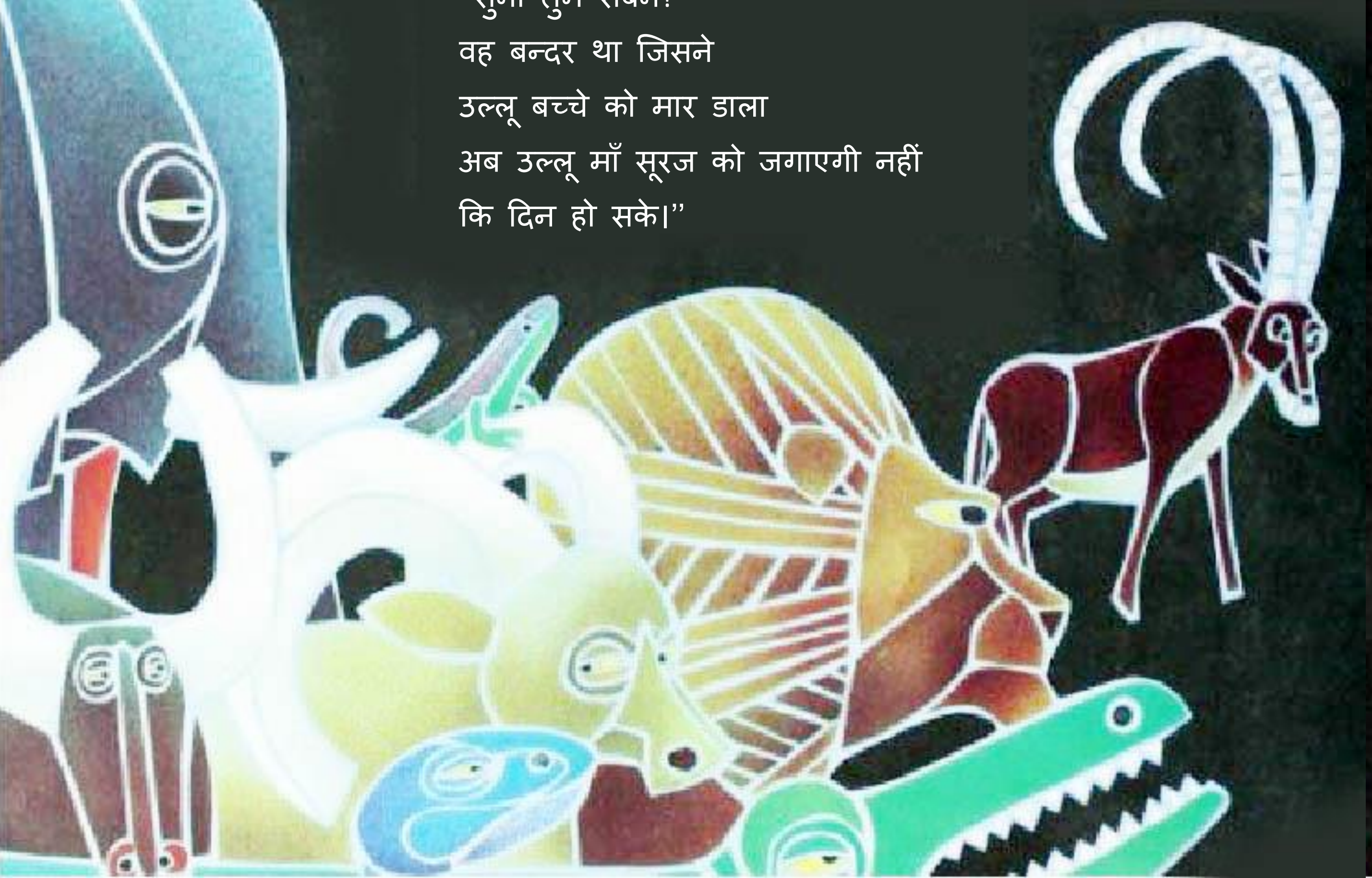
‘‘सुना तुम सबने?

वह बन्दर था जिसने

उल्लू बच्चे को मार डाला

अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं

कि दिन हो सके।’’







अब शेर राजा ने बन्दर को बुलाया। वह घबराता, ताकता-झांकता आया इधर-उधर, इधर-उधर, इधर-उधर।

''बन्दर,'' राजा ने कड़क कर पूछा, ''तुमने माँ उल्लू के एक नन्हे को क्यों मार डाला?

''दुहाई महाराज!''बन्दर ने काँपते हुए जवाब दिया, ''गलती सारी कौवे की है। वह काँव-काँव कर सबको ख़तरे की चेतावनी दे रहा था। मैं तो मदद करने एक से दूसरे पेड़ पर कूदने लगा। एक डाल टूटी और मैं धपाक से उल्लू माँ के घोंसले पर जा गिरा।

राजा ने सभा से कहाः

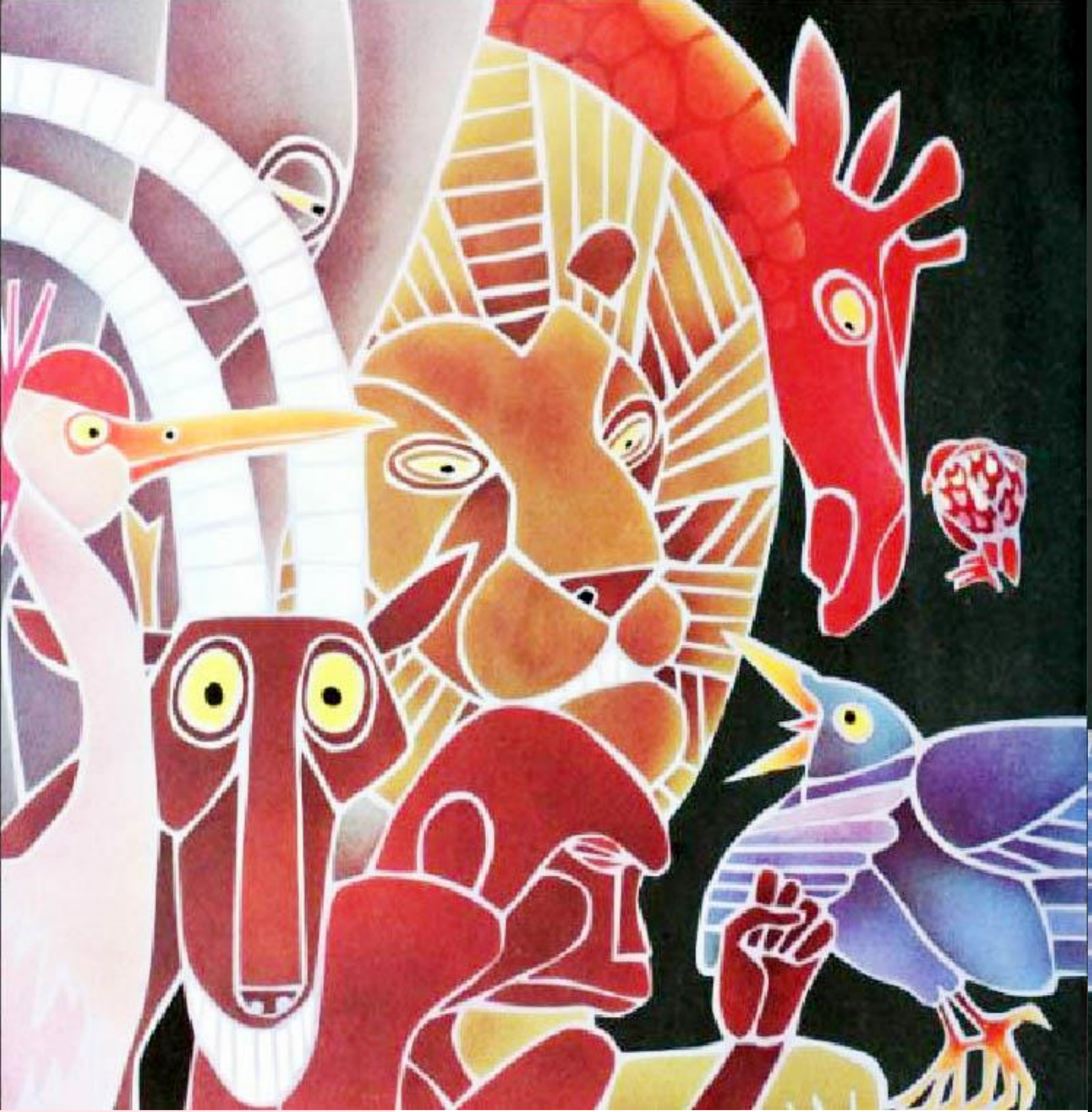
''तो यह कौवा था

जिसने बन्दर को चेताया,

जिसने उल्लू के बच्चे को मारा

अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं

कि दिन हो सके।''



यह सुन शेर राजा ने कौवे को हाज़िर होने का कहा। वह बड़ा परिन्दा अपने डैन फड़फड़ाता आया। उसने कहा, ''शेर महाराज, गलती सारी खरगोशनी की है। मैंने उसे दिन के वक़्त जान बचाए भागते देखा था। क्या यह सबको चेताने का कारण नहीं?''

राजा ने सहमति में सिर हिलाया और सभा से बोलाः

''तो यह खरगोशनी थी,

जिसने कौवे को चौंकाया,

जिसने बन्दर को चेताया,

जिसने उल्लू के बच्चे को मारा,

अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं

कि दिन हो सके।''



तो शेर राजा ने अब खरगोशनी को बुलवाया। वह घबराती सामने आई, उसका एक थर्राता पंजा उठा हुआ था।

''खरगोशनी,'' शेर राजा ने दहाड़ कर पूछा। ''तुमने प्रकृति का नियम तोड़ दिन के समय भागम-भाग, भागम-भाग क्यों मचाई?''

''रहम महाराज,'' खरगोशनी काँपते हुए बोली। ''गलती अजगर की है। मैं तो अपने बिल में अपने कामों में मगन थी। तभी वह बड़ा-भारी अजगर मेरे घर में घुसा चला आया। उसने ही मुझे अपने बिल से भगा दिया।''

राजा ने सभा से कहाः
''तो वह अजगर था,
जिसने खरगोशनी को डराया,
जिसने कौवे को चौंकाया,
जिसने बन्दर को चेताया,
जिसने उल्लू के बच्चे को मारा,
अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं
कि दिन हो सके।''







शेर राजा ने अजगर को हाज़िर होने को कहा। वह दूसरे जानवरों के पास से सरसर, सरसर, सरसर सरकता आया। “पर महाराज सारी गलती गोह की थी। वह मुझसे बोला ही नहीं। मैंने साचा कि वह मेरे ख़िलाफ़ साज़िश रच रहा है। जब मैं खरगोशनी के बिल में घुसा तब मैं सिर्फ़ छिपने की कोशिश कर रहा था।

राजा ने सभा से कहाः

तो वह गोह था,

जिसने अजगर को सहमाया,

जिसने खरगोशनी को डराया,

जिसने कौवे को चौंकाया,

जिसने बन्दर को चेताया,

जिसने उल्लू के बच्चे को मारा,

अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं

कि दिन हो सके।”



गोह तो बैठक में था ही नहीं। उसने बैठक का ऐलान सुना ही नहीं था। सो बारहसिंगे को उसे लिवा लाने भेजा गया।

जब गोह अपने कानों में टहनियाँ ठूंसे, अपना सिर हिलाते-डुलाते, हिलाते-डुलाते आया तो सब जानवर उसे देख हंस पड़े।

शेर राजा ने गोह के कानों से टहनियाँ निकाल फेंकीं, पट, पट। तब पूछा "गोह तुम अजगर के ख़िलाफ़ कौन-सी साज़िश रच रहे थे?"

"साज़िश? कतई नहीं," गोह चीखा। "अजगर तो मेरा दोस्त है।"

"तो तुमने मुझे सुप्रभात क्यों नहीं कहा?" अजगर ने तल्खी से पूछा

"मैंने कुछ सुना ही नहीं, बल्की तुम्हें देखा तक नहीं," गोह ने कहा।
"मच्छर ने मुझसे इतना बड़ा झूठ बोला था जो मुझसे सुना ही नहीं गया।
सो मैंने अपने कानों में टहनियाँ ठूंस उन्हें बन्द कर दिया।"

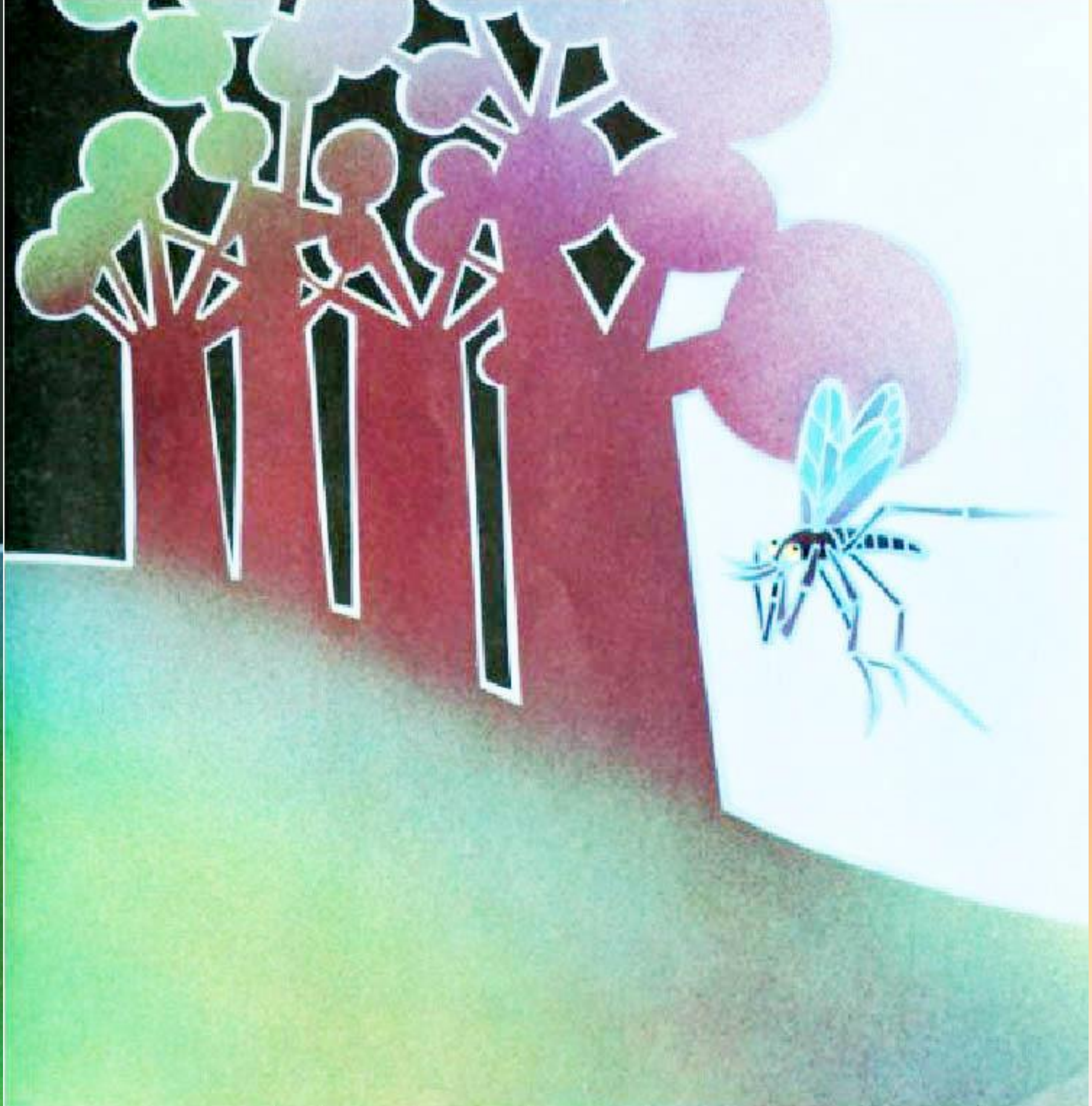
"हा, हा हा!" शेर ज़ोर से हंसा। "ओह! तो इसलिए तुम्हारे कानों में टहनियाँ थीं।"

"जी हुज़ूर!" गोह ने जवाब दिया। "गलती दरअसल मच्छर की थी।"

शेर राजा ने सभा से कहा:

"तो वह मच्छर था
जिसने गोह को परेशान किया,
जिसने अजगर को सहमाया,
जिसने खरगोशनी को डराया,
जिसने कौवे को चौंकाया,
जिसने बन्दर को चेताया,
जिसने उल्लू के बच्चे को मारा,
अब उल्लू माँ सूरज को जगाएगी नहीं
कि दिन हो सके।"





“मच्छर को सज़ा दो! मच्छर को सज़ा दो!” सभा के सारे जानवरों ने चीख कर कहा।

जब उल्लू माँ ने यह सुना, उसके मन को संतोष हुआ।

उसने अपना सिर पूरब दिशा की ओर घुमाया और सूरज को पुकाराः हूउउउउ! हूउउउउ! हूउउउउ!

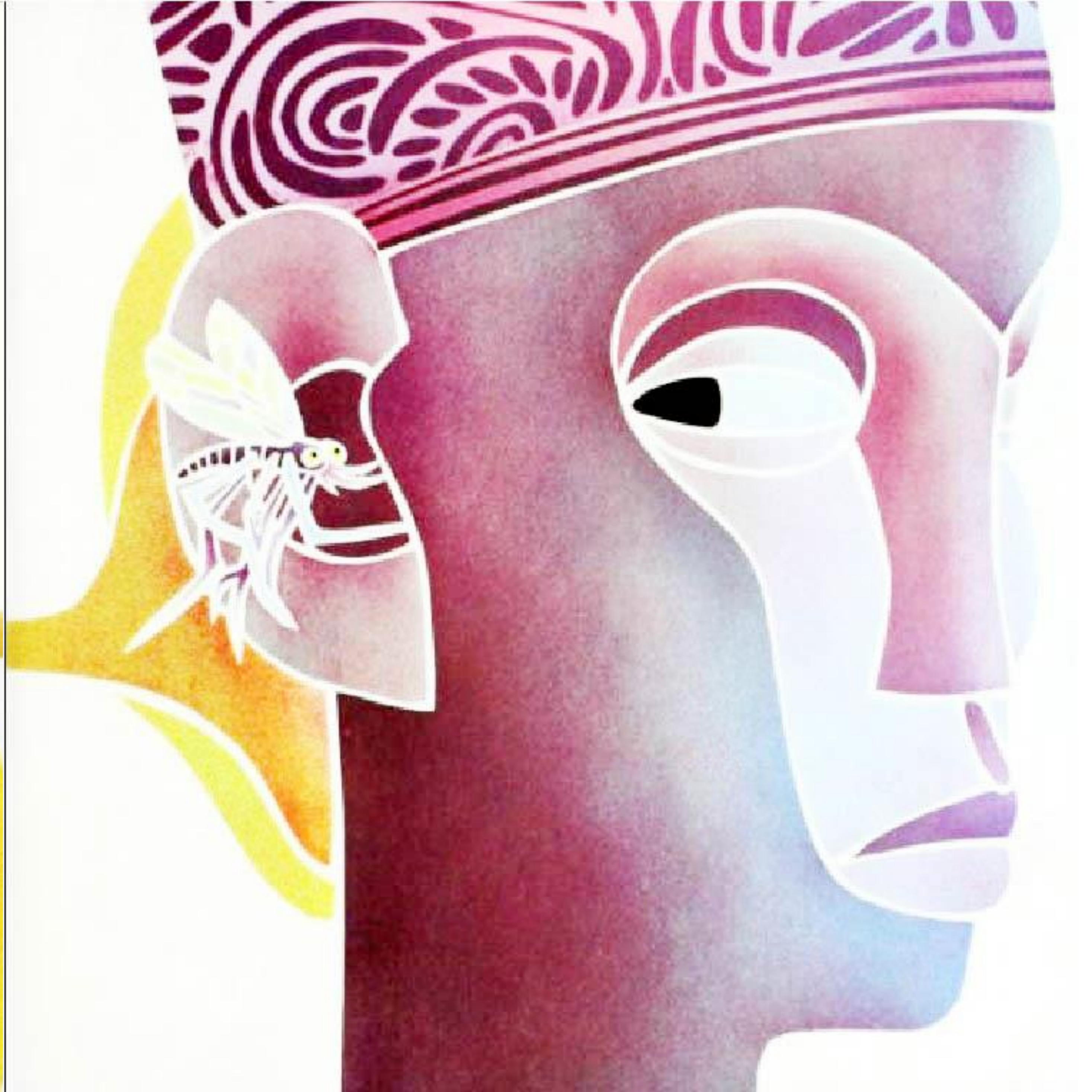
और सूरज उग आया।

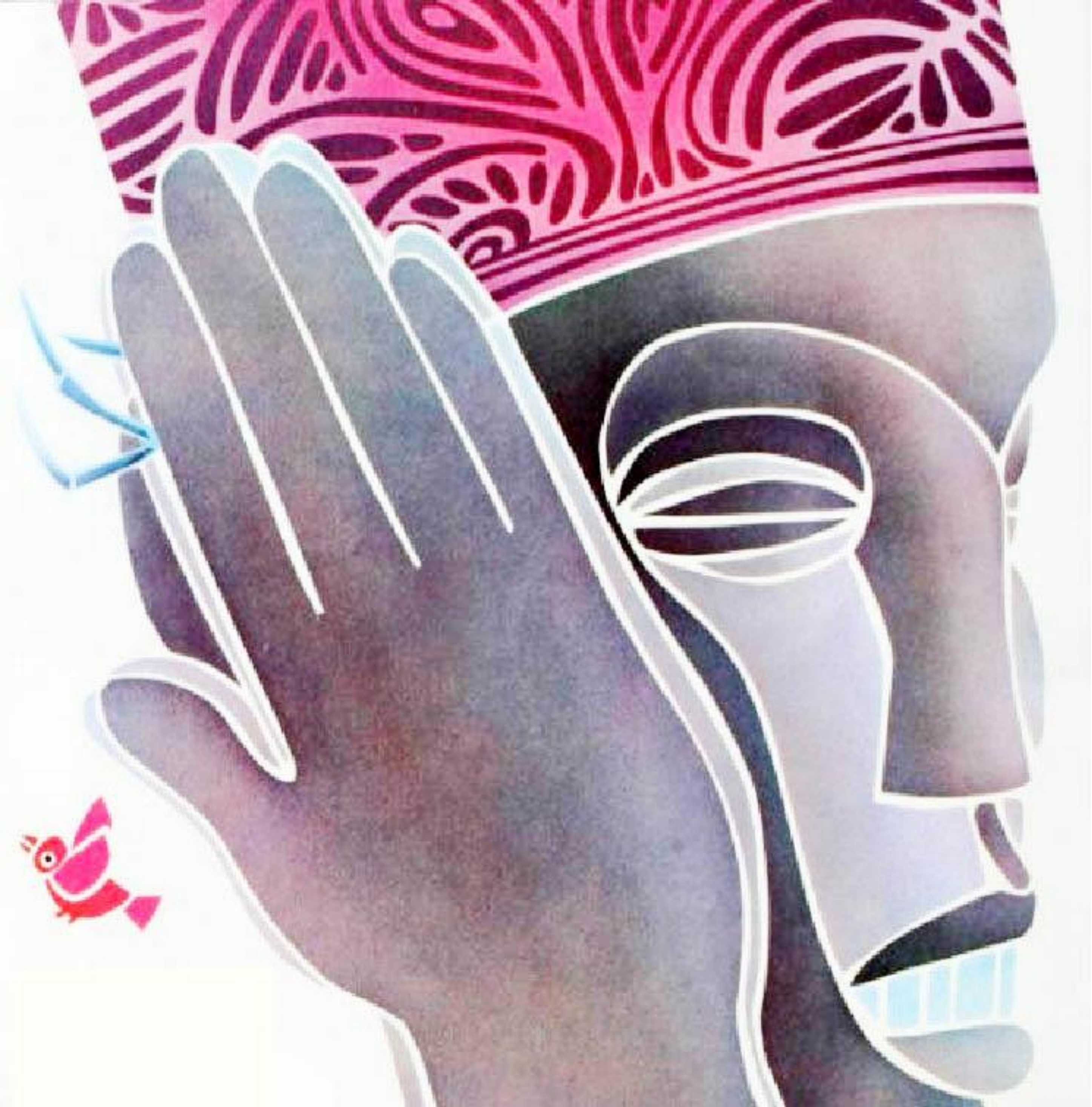


इधर मच्छर, जो झाड़ी में बैठा सारी चर्चा सुन रहा था, एक मुड़े हुए पत्ते के नीचे दुबक गया। उसे खोज कर सभा में लाया ही नहीं जा सका पर कहते हैं ना, चोर की दाढ़ी में तिनका! मच्छर आज तक लोगों के कानों में भिनभिनाता है। शिकायत करता है। और पूछता है, ''भिनभिन! क्या लोग अभी भी मुझसे नाराज़ हैं?''

जब वह पूछता है उसे ईमानदार जवाब मिलता है।









यह पश्चिम अफ्रीका की लोक-कथा है

यह मज़ाकिया है

इस क़िताब को कैल्डीकॉट पदक मिला था

क्योंकि इसके चित्र बेहद खूबसूरत हैं।

